UNIVERSITY NEWS ON 03 FEBRUARY 2026

AMAR UJALA

गरीबी से लड़ाई में छोटे कदम हैं ज्यादा असरदार : प्रो. अभिजीत

नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री का लखिवि में विशेष व्याख्यान

नोबेल अवार्डी प्रो. अभिजीत बनर्जी। अमर

- रवींद्रनाथ टैगोर के बाद लखिवि आने वाले दूसरे नोबेल अवार्डी हैं प्रो. बनर्जी : रवींद्रनाथ टैगोर के बाद प्रो. अभिजीत बनर्जी लखनऊ विश्वविद्यालय आने वाले दूसरे नोबेल अवार्डी हैं। प्रो. अभिजीत भारतीय-अमेरिकी विकास अर्थशास्त्री और एमआईटी में प्रोफेसर हैं, जिन्हें वैश्विक गरीबी कम करने के प्रयोगात्मक दृष्टिकोण के लिए पानी एस्थर डुफ्लो के साथ वर्ष 2019 का अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार मिला। वे दुनिया के छठवें ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें एक साथ नोबेल पुरस्कार मिल चुका है।

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में सोमवार को नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री प्रो. अभिजीत बनर्जी का विशेष व्याख्यान हुआ। यह व्याख्यान उनकी चर्चित पुस्तक- पुअर इकोनॉमिक्स के दूसरे संस्करण पर केंद्रित रहा। प्रो. बनर्जी ने कहा कि भूख और वैश्विक गरीबी जैसी जटिल समस्याओं के समाधान के लिए प्रयोग आधारित सोच बेहद जरूरी है। गरीबी को समझने और उससे प्रभावी ढंग से निपटने में पोषण, शिक्षा, माइक्रोक्रेडिट और छोटे-छोटे प्रयासों की अहम भूमिका होती है। नीतियां तभी कारगर बनती हैं, जब उनका जमीनी स्तर पर सही ढंग से क्रियान्वयन हो।

उन्होंने 147 देशों में किए गए अपने शोध का हवाला देते हुए बताया कि केवल आय बढ़ाने से समस्याएं स्वतः समाप्त नहीं होतीं। लोगों के व्यवहार, निर्णय प्रक्रिया और प्राथमिकताओं में सकारात्मक बदलाव कई बार ज्यादा प्रभावी साबित होते हैं।

उन्होंने एनजीओ 'प्रथम' के साथ संचालित टॉचिंग एट द राइट लेवल कार्यक्रम का उल्लेख किया। आर्थिक भार्थी पटरानुक्रम बच्चों की प्रतिभा को रोक देते हैं, इसलिए शिक्षा को समय, व्यवहारिक और सीखने योग्य बनाना जरूरी है।

उन्होंने 147 देशों में किए गए अपने शोध का हवाला देते हुए बताया कि केवल आय बढ़ाने से समस्याएं स्वतः समाप्त नहीं होतीं। लोगों के व्यवहार, निर्णय प्रक्रिया और प्राथमिकताओं में सकारात्मक बदलाव कई बार ज्यादा प्रभावी साबित होते हैं।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रो. अरविंद मोहन के स्वागत भाषण से हुई। अध्यक्षीय संबोधन कुलपति प्रो. जेपी सैनी ने किया। कार्यक्रम में पूर्व मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश आलोक रंजन, मनोज कुमार सिंह, प्रदेश भंडारण, अपर मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश आलोक पांडे, मुख्यमंत्री के सलाहकार अवनीश कुमार अवस्थी, रोहित नंदन जौहरी, अमित घोष, मुख्यमंत्री के सलाहकार अवनीश कुमार अवस्थी आदि मौजूद थे।

AMAR UJALA

लखनऊ विवि में पीएचडी वायवा मूल्यांकन प्रक्रिया होगी ऑनलाइन

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में शोध व्यवस्था को अधिक सुदृढ़, पारदर्शी और समयबद्ध बनाने के उद्देश्य से पीएचडी वायवा और मौखिक मूल्यांकन की प्रक्रिया को ऑनलाइन करने का निर्णय लिया गया है। कुलपति प्रो. जे.पी. सैनी की अध्यक्षता में सोमवार को मंथन हॉल में आयोजित बैठक में यह निर्णय लिया गया, जिसमें सभी संकायाध्यक्ष और विभागाध्यक्ष उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय से संबद्ध नए महाविद्यालयों का निरीक्षण अब ऑनलाइन किया जाएगा। इसके तहत कॉलेज अपनी तैयारियां, प्रशासनिक और भौतिक सुविधाओं का विवरण डिजिटल रूप में प्रस्तुत करेंगे। निरीक्षण समिति ऑनलाइन परीक्षणों के माध्यम से मूल्यांकन करेगी, जिससे समय और धन की बचत के साथ पारदर्शिता भी बढ़ेगी। (नई दिल्ली रिपोर्टर)

- **पीएचडी वायवा होगा ऑनलाइन :** शोधार्थियों के हित में पीएचडी वायवा को ऑनलाइन करने का निर्णय लिया गया है। इससे देश-विदेश के विशेषज्ञ आसानी से जुड़ सकेंगे और छात्रों को बार-बार परेशानी से बचना मिलेगी। साथ ही, पीएचडी प्रक्रिया का मूल्यांकन भी अब ऑनलाइन होगा, जिससे रिपोर्ट समय पर मिलेगी और अध्ययनरत रहेंगे से बचा जा सकेगा। इसके अलावा, वेबसाइट से एक्सटेंशन में पंजीकरी के लिए होने वाला मूल्यांकन भी ऑनलाइन किया जाएगा।
- **'सपथ' पोर्टल पर अपेक्षित होगी अभिलाषा :** छात्रों को उपस्थिति दर्ज करने के लिए 'सपथ' पोर्टल पर अभिलाषा अपेक्षित विकल्प लागू करने का भी निर्णय लिया गया है, जिससे कामकाजी कर्मचारी खाना होंगे। कुलपति प्रो. जे.पी. सैनी ने कहा कि डिजिटल साधन से विभिन्न सेवा परिवर्तियों में तेजी आएगी। (नई दिल्ली रिपोर्टर)

HINDUSTAN

एलयू में नोबेल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर अभिजीत बनर्जी का सार्वजनिक व्याख्यान

आय बढ़ाने की अपेक्षा प्राथमिकताओं व व्यवहार में बदलाव असरदार:बनर्जी

शोध

एलयू में नोबेल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर अभिजीत बनर्जी का स्वागत किया गया।

हर व्यक्ति को जीवन में समान अवसर मिलें

व्याख्यान के बाद प्रश्न-उत्तर सत्र आयोजित किया गया, जिसमें उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था से जुड़े महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में समान अवसर दिया जाना चाहिए। शिक्षा और स्वास्थ्य नीतियों की गुणवत्ता की जरूरत है।

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री प्रोफेसर अभिजीत विनायक बनर्जी के सार्वजनिक व्याख्यान का आयोजन हुआ। महिंद्रा सत्यनाथन लखनऊ महोत्सव के सहयोग से आयोजित व्याख्यान में प्रोफेसर बनर्जी ने आपकी प्रस्तावित पुस्तक पुअर इकोनॉमिक्स: ए रेडिकल रीथिंकिंग ऑफ दि वे टू फाइट ग्लोबल पावर्टी के द्वितीय संस्करण पर बात की। उन्होंने कहा कि आय बढ़ाने की अपेक्षा प्राथमिकताओं व व्यवहार में बदलाव अधिक प्रभावी परिणाम दे सकता है। पारंपरिक सहायता संबंधी कार्यक्रमों के माध्यम से पोषण में सुधार करना मुश्किल होता, क्योंकि अंततः ये कार्यक्रम परिवारों के लिए 'आय सब्सिडी' समान हो जाते हैं। वे कहते हैं कि सोमवार को लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में व्याख्यान दे रहे थे।

प्रो. अभिजीत बनर्जी ने अपने पुस्तक 'पुअर इकोनॉमिक्स' में वैश्विक गरीबी कम करने के प्रयोगात्मक दृष्टिकोण के लिए पानी एस्थर डुफ्लो के साथ वर्ष 2019 का अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार मिला है। माइक्रोक्रेडिट के विषय में उन्होंने कहा कि अब यह कोई 'जादू' समाधान नहीं रहा है। इसके अलावा, वेबसाइट से एक्सटेंशन में पंजीकरी के लिए होने वाला मूल्यांकन भी ऑनलाइन किया जाएगा।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रो. अरविंद मोहन के स्वागत भाषण से हुई। अध्यक्षीय संबोधन कुलपति प्रो. जे.पी. सैनी ने किया। कार्यक्रम में पूर्व मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश आलोक रंजन, मनोज कुमार सिंह, प्रदेश भंडारण, अपर मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश आलोक पांडे, मुख्यमंत्री के सलाहकार अवनीश कुमार अवस्थी, रोहित नंदन जौहरी, अमित घोष, मुख्यमंत्री के सलाहकार अवनीश कुमार अवस्थी आदि मौजूद थे।

DAINIK JAGARAN

'खाद्य सब्सिडी से पोषण में सुधार होगा मुश्किल'

व्याख्यान को संबोधित करते अर्थशास्त्री एवं नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. अभिजीत बनर्जी व मौजूद लोग • जागरण

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से खतरे में ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था

प्रो. बनर्जी ने दिया व्याख्यान कहा कि ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण खतरे में है। गुलामी विषय कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में समान अवसर दिया जाना चाहिए तथा शिक्षा और स्वास्थ्य नीतियों की गुणवत्ता की जरूरत है।

लखनऊ। नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री प्रो. अभिजीत बनर्जी ने अपने शोध का गुणवत्ता देते हुए कहा कि आय में वृद्धि होने से स्वतः पोषण स्तर में सुधार हो जाता है, यह धारणा सही नहीं है। आय बढ़ाने की तुलना में लोगों को प्राथमिकताओं और व्यवहार में परिवर्तन लाना अधिक प्रभावी परिणाम दे सकता है। पारंपरिक खाद्य सब्सिडी कार्यक्रमों के माध्यम से पोषण में सुधार करना मुश्किल होता, क्योंकि अंततः ये कार्यक्रम परिवारों के लिए 'आय सब्सिडी' समान हो जाते हैं। वे कहते हैं कि सोमवार को लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में व्याख्यान दे रहे थे।

प्रो. अभिजीत बनर्जी ने अपने पुस्तक 'पुअर इकोनॉमिक्स' में वैश्विक गरीबी कम करने के प्रयोगात्मक दृष्टिकोण के लिए पानी एस्थर डुफ्लो के साथ वर्ष 2019 का अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार मिला है। माइक्रोक्रेडिट के विषय में उन्होंने कहा कि अब यह कोई 'जादू' समाधान नहीं रहा है। इसके अलावा, वेबसाइट से एक्सटेंशन में पंजीकरी के लिए होने वाला मूल्यांकन भी ऑनलाइन किया जाएगा।

सुझाव जिला संस्थाओं का तीव्र विस्तार हुआ है, फिर भी वे अभाव और अनियमित की चपेट में बनाए हैं। उन्होंने कहा कि आय नीति-निर्माण में जिस बात का अभाव है, वह सामाजिक नीतियों के क्रियान्वयन से संबंधित सूक्ष्म विवरणों पर स्पष्ट मार्गदर्शन है। अध्यक्षता कुलपति प्रोफेसर जेपी सैनी ने की। स्वागत संबोधन के अभिवादन प्रो. अरविंद मोहन ने किया। संचालन प्रो. रोहित नंदन ने किया। पूर्व मुख्य सचिव आलोक रंजन, पूर्व मुख्य सचिव मनोज सिंह उपस्थित रहे।

AAJ

एलयू में नोबेल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर अभिजीत बनर्जी का विशेष व्याख्यान

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. जेपी सैनी के संरक्षण में तथा कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो अरविंद मोहन के आतिथ्य में नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री प्रो अभिजीत बनर्जी द्वारा को एक सार्वजनिक व्याख्यान का आयोजन किया गया। विवि के मालवीय सभागार में आयोजित यह व्याख्यान उनकी पूर्व प्रकाशित पुस्तक पुअर इकोनॉमिक्स, रेडिकल रीथिंकिंग ऑफ दी वे टू फाईट ग्लोबल पावर्टी के द्वितीय संस्करण पर केंद्रित था। प्रो बनर्जी भूख और वैश्विक गरीबी जैसी समस्याओं के समाधान हेतु प्रयोगात्मक दृष्टिकोण के अनुप्रयोग पर था। अपने वक्तव्य में उन्होंने गरीबी को प्रभावित करने वाले पाँच प्रमुख स्तंभों , कुपोषण, सूक्ष्म ऋण , शिक्षा, गरीबी जाल तथा छोटे प्रयासों की शक्ति पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि ऋण की अनुपलब्धता प्रायः लोगों को गरीबी के दुष्चक्र में फंसा देती है। इस संदर्भ में उत्पादक परिसंपत्तियों के हस्तांतरण को तकनीकी प्रशिक्षण के साथ संयोजित करने वाले कार्यक्रम परिवारों को गरीबी से आत्म-रोजगार की ओर ले जाने में सहायक हो सकते हैं। सूक्ष्म वित्त के बारे में उन्होंने कहा कि पिछले 10 से 15 वर्षों में सूक्ष्म वित्त संस्थानों का तीव्र विस्तार हुआ है, फिर भी वे अब भी औसत व्यक्ति की पहुंच से बाहर हैं।

AAJ

लखनऊ विश्वविद्यालय के आगाज -26 का समापन

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के द्वितीय परिसर में आयोजित वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता आगाज -26 आज अपने पूरे उत्साह के साथ संपन्न हुई। प्रतियोगिता का आयोजन एथलीट एसोसिएशन लखनऊ विश्वविद्यालय के विशेष सहयोग और मार्गदर्शन में किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि बबलू कुमार डी आई जी लखनऊ और विशिष्ट अतिथि दीपक नगरिया परीक्षा.नियंत्रक एकेटीयू लखनऊ रहे। समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि आईपीएस बबलू कुमार ने अपने छात्र जीवन को याद किया। उन्होंने कानपुर में बिताए अपने दिनों को साझा करते हुए कहा कि तकनीकी और कॉलेज के कार्यक्रम न केवल दिलचस्प होते हैं, बल्कि जीवन भर के लिए संजोने वाली यादें बन जाते हैं। उनके अनुसार, कॉलेज के दिनों की छोटी-छोटी तकरार और अनुभव ही भविष्य में सबसे सुखद स्मृतियां बनते हैं। उन्होंने छात्रों को प्रेरित करते हुए कहा कि इंजीनियरिंग के छात्र अपनी तकनीकी विशेषज्ञता से पुलिस व्यवस्था की समस्याओं का समाधान खोजने में मदद कर सकते हैं। विशिष्ट अतिथि दीपक नगरिया ने खेल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि खेल हमें दिनचर्या से परे हटकर नेतृत्व क्षमता और सर्वांगीण विकास में मदद करते हैं।

HINDUSTAN TIMES

Experiments, reforms will help find solution to poverty: Nobel Laureate

Godhooli Sharma
godhooli.sharma@htlive.com

Prof Abhijeet Banerjee gives a lecture at LU on Monday. HT

LUCKNOW: Nobel Laureate and economist Prof Abhijit Banerjee on Monday said that the solution to a complex problem like poverty comes from ground-level experiments and micro-level policy reforms.

Delivering a lecture at the Lucknow University at an event organised as part of the Samatkada Lucknow Festival, Prof Banerjee dwelt on five pillars that determine the parameters of poverty: nutrition, micro-credit, poverty traps, education system failure and the power of small things.

His address was focused on the second edition of the book, "Poor Economics: A Radical Rethinking of the Way to Fight Global Poverty" that he co-authored with French-American economist Esther Duflo.

"When we began working on the book, we believed that providing free food or increased income won't help with the problem of poverty but we were wrong. In large-scale field experiments, we found that income increases consumption and giving people money helps in changing their nutrition as they get optimised," Banerjee said.

He highlighted that the non-availability of credit often traps people in poverty. "Programmes that focus on the transfer of productive assets combined with technical training could enable households from poverty to self-employment. This approach was applied by BRAC (Bangladesh Rural Advancement Committee) which proved to lend a big push to the ultra-poor from poverty trap," he added.

"Besides, although microfinance institutions have expanded rapidly over the last 10 to 15 years, they still remain out of reach of many people and only top 5% are able to gain from it. Microfinance leads some of the beneficiaries to expand their businesses, it does not appear to fuel an escape from poverty based on those small businesses," Banerjee said.

He said even though children have access to teachers, school buildings but the schools are working as per a particular pedagogy which does not identify the talent of a child. "If a child cannot read, the teacher must teach them to read. We found out through certain experiments

HINDUSTAN TIMES

LU to shift PhD viva-voce, thesis evaluation online

HT Correspondent
letters@htlive.com

The LU campus HT FILES

LUCKNOW: Lucknow University (LU) will conduct PhD viva-voce examinations online, making it easier to involve experts from across India and abroad while sparing researchers the need to travel. Vice-chancellor Prof JP Saini announced the measure at a meeting of deans and heads of departments on Monday, unveiling a series of digital initiatives aimed at improving transparency and efficiency.

"The PhD thesis will now be evaluated online. This will expedite the evaluation process, ensure the timely availability of reports, and prevent unnecessary delays for researchers. Digital recordings will also ensure secure documentation for future reference," said Saini.

The evaluation for promotion from Junior Research Fellow (JRF) to Senior Research Fellow (SRF) will also be conducted online, making the process more transparent and ensuring timely promotions.

The university will introduce an online inspection system for affiliated colleges seeking new affiliation, the vice chancellor said in the meeting. Colleges will be required to submit details of their academic, administrative, and physical facilities digitally, Saini said. "An inspection committee will assess these through an online platform, bringing transparency to the process while saving time and money. Digital records will be preserved for future reference and re-evaluation."

He also said that an online system for student attendance on the Samarth portal will be implemented by the university.

Saini said these decisions will accelerate the university's academic and research activities while saving time and money through digital processes.

TIMES OF INDIA

'Indian kids as smart as children of US profs'

We Have The Talent We Need: Banerjee

Mousumi Chakraborty

Nobel laureate Abhijit Banerjee during the event at Lucknow University on Monday

Mukhta Tewari
@timesofindia.com

Lucknow: A three-year-old child in India is just as smart and capable as the son or daughter of a professor at the Massachusetts Institute of Technology (MIT) or Harvard University.

The basis of the revelation is a study on pre-mathematics skills among slum children (3 to 5 years) in Delhi and a batch of children of PhD students or professors in Cambridge, Massachusetts.

The performance of both groups was exactly the same, said Nobel laureate Abhijit Banerjee while delivering a lecture on 'Poor Economics: A Radical Rethinking of the Way to Fight Global Poverty' at Lucknow University's Malviya Hall, as part of the Mahindra Sanatkada Lucknow Festival, on Monday.

"We should not think that we do not have talent. We have all the talent we need," said Banerjee, while insisting that the school system often erodes students' confidence by insisting that there was only one correct method to solve a problem.

Recalling his own experience, he said teachers objected when he solved problems mentally and demanded step-by-step procedures, a mindset he described as flawed.

"Doing algorithms is not important; solving problems is important," he said.

In his address, Banerjee outlined five pillars that shape poverty outcomes—nutrition, microcredit, education, poverty traps and the impact of small interventions — underscoring the role of evidence from field experiments in designing policy.

"The first pillar, which is nutrition, is a kind of historic obsession of the development community. In India, for a very long time, we defined poverty in some beneficiaries ... we gaped businesses but does not, on average, drive a sustained escape from poverty through small enterprises.

"Failures in social policy are often driven by three factors — intuition, ideology and inertia," he said, and argued that broad prescriptions such as good governance, democracy, rule of law and trade policy are not sufficient by themselves.

"Failures in social policy are often driven by three factors— intuition, ideology and inertia," he said, and argued that broad prescriptions such as good governance, democracy, rule of law and trade policy are not sufficient by themselves.

I NEXT

डिजिटलाइजेशन से नई ऊंचाईयों पर पहुंचेगा एलयू

वीसी प्रो. जेपी सैनी ने सोमवार को फैकल्टी के साथ की मीटिंग

ऑनलाइन होगी अटेंडेंस

अब स्टूडेंट्स की अटेंडेंस समर्थ पोर्टल के जरिए ऑनलाइन होगी, इससे डिजिटल रिकॉर्ड सेफ रहेगा और स्टूडेंट्स कहीं से भी अपनी प्रग्रेस देखा सकेंगे. इससे प्रोसेस पेपरलेस होगी और पेसे के साथ-साथ टाइम की भी बचत होगी. वीसी प्रो. जे.पी. सैनी ने कहा कि वे कदम विश्वविद्यालय की नई ऊंचाइयों पर ले जाने में सहायक होंगे और छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं शोध का वातावरण प्रदान करेंगे.

LUCKNOW (2 Feb): लखनऊ यूनिवर्सिटी के वीसी प्रो. जेपी सैनी ने सोमवार को मंथन हॉल सभी फैकल्टीज के साथ एक मीटिंग की, जिसमें यूनिवर्सिटी की रिसर्च और एकेडमिक प्रोसेस को ज्यादा ट्रांसपेरेंट और इंटरेक्टिव बनाने के लिए कई बड़े फैसले लिए गए. प्रो. सैनी ने एडेड कॉलेजेस के ऑनलाइन इंस्पेक्शन की व्यवस्था पर जोर दिया. इस प्रोसेस के तहत नए एडेड कॉलेजेस को अपनी ऑफिशियल वेबसाइट्स, एडमिनिस्ट्रेटिव और इंफ्रा रिलेटेड सभी फैसिलिटीज को डिजिटल माध्यम पर प्रस्तुत करना होगा. इंस्पेक्शन कमिटी ऑनलाइन माध्यम से ही कॉलेजेस का ऑकलन करेगी.

ऑनलाइन होगा पीएचडी वाइवा

अब रिसर्चर्स के लिए पीएचडी वाइवा ऑनलाइन होगा, इससे देश-विदेश के एक्सपर्ट्स को वाइवा में शामिल किया जा सकेगा. रिसर्चर्स को भी ट्रैवलिंग की प्रॉब्लम नहीं होगी, टाइम भी बचेगा. इसके साथ ही पीएचडी थीसिस का मूल्यांकन भी अब ऑनलाइन किया जाएगा. इससे ऑनलाइन प्रक्रिया ना सिर्फ तेज होगी बल्कि रिपोर्ट भी टाइम पर आएगी और डिजिटल रिकॉर्ड फ्यूचर के लिए सेफ रहेंगे.

आंतरिक पत्राचार में लेटरहेड पर रोक

अमृत विचार, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय में आंतरिक पत्राचार में लेटरहेड के उपयोग पर रोक लगा दी गई है। आदेश में कहा गया है कि यह रोक ना सहा है कि प्रशासनिक अधिकारी, संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष एवं कर्मचारियों को विश्वविद्यालय के आंतरिक पत्राचार हेतु लेटरपेड का प्रयोग करना रहे है, जिससे अनावश्यक आर्थिक व्यय हो रहा है। कुलसचिव के आदेश के अनुसार में यह निर्णय लिया गया है कि विश्वविद्यालय का समस्त आंतरिक पत्राचार अब सादे कागज पर बैठाल कार्यालय ज्ञापनों के माध्यम से किया जाएगा।

AMRIT VICHAR

लखिवि में रंगए अल्फाज का आयोजन

अमृत विचार, लखनऊ: लखनऊ विश्वविद्यालय में मेजारी द्वारा परिचय द्वारा कविता प्रतियोगिता रंग-ए- अल्फाज का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का विषय 'अंदाज-ए लखनऊ' व 'विरासत' रखा गया था। प्रतियोगिता में दोनों विषय पर अपनी रचना रखी हुए लखनऊ की तहजीब, नजाकत व नफासत के साथ देशवासियों के रगों में इनसे सराबोर किया। निर्णायक की भूमिका डा. ओएस उपाध्याय, प्रो. अंसारी सिद्दा व डॉ. अभिजात वर्मा ने निभाई। कार्यक्रम का संचालन अभिजात वर्मा एवम्पाद्य, प्रोफेसर वर्मा और उनकी टीम के नेतृत्व में किया गया। लखनऊ का संचालन उपाध्यक्ष श्वेता वर्मा ने किया।

VOICE OF LUCKNOW

नयी संबद्धता के तहत कॉलेजों का होगा ऑनलाइन निरीक्षण

लखनऊ। लखिवि के कुलपति प्रो. जेपी. सैनी की अध्यक्षता में सोमवार को मंथन हाल में सभी संकायाध्यक्षों एवं विभागाध्यक्षों की एक विशेष बैठक आहूत की गयी। इस बैठक में विश्वविद्यालय की शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों को और अधिक पारदर्शी, सुलभ तथा समयबद्ध बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। इन निर्णयों का उद्देश्य उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करना, छात्रों एवं शोधार्थियों को आधुनिक तकनीक का लाभ पहुंचाना तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाना है।

बैठक में लिए गए प्रमुख निर्णयों में नई संबद्धता के तहत कॉलेजों की प्रविलेन नहीं होगी, टाइम भी बचेगा. इसके साथ ही पीएचडी थीसिस का मूल्यांकन भी अब ऑनलाइन किया जाएगा. इससे ऑनलाइन प्रक्रिया ना सिर्फ तेज होगी बल्कि रिपोर्ट भी टाइम पर आएगी और डिजिटल रिकॉर्ड फ्यूचर के लिए सेफ रहेंगे.

समिति अब ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से ही महाविद्यालयों की स्थिति का आकलन करेगी। इससे निरीक्षण प्रक्रिया में पारदर्शिता आएगी, समय और धन दोनों की बचत होगी, तथा विश्वविद्यालय प्रशासन को तत्काल रिपोर्ट उपलब्ध होगी। डिजिटल रिकॉर्ड भविष्य में संदर्भ और पुनः मूल्यांकन के लिए सुरक्षित रहेगा। साथ ही शोधार्थियों के लिए पीएचडी वाइवा अब ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किया जाएगा। इससे देश-विदेश के विशेषज्ञों को वाइवा में सम्मिलित करना आसान होगा। ऑनलाइन पीएचडी असेसमेंट के तहत थीसिस का मूल्यांकन अब ऑनलाइन माध्यम से किया जाएगा। इससे मूल्यांकन प्रक्रिया तेज होगी, रिपोर्ट समय पर उपलब्ध होगी और शोधार्थियों को अनावश्यक विलंब से बचाया जा सकेगा।

AMRIT VICHAR

लविवि में नहीं होगी विद्यार्थियों की उपस्थिति

जस • लखनऊ : लविवि ने विद्यार्थियों की उपस्थिति दर्ज करने के लिए समर्थ पोर्टल पर अनलाइन प्रणाली लागू करने का निर्णय लिया है। इस व्यवस्था से उपस्थिति दर्ज करने में डिजिटल रूप में सुविधा होगा। छात्र कहीं से भी अपनी उपस्थिति दर्ज कर सकेंगे। यह निर्णय कोषाध्यक्ष की कुलपति प्रो. जेपी सैनी की अध्यक्षता में लिया गया।

संचार हाल में आयोजित बैठक में पीएचडी वायवा (मौखिक परीक्षा) अब अनलाइन माध्यम से करने का निर्णय लिया गया। इससे देश-विदेश के विशेषज्ञों को वायवा में शामिलित करना आसान होगा, शोधार्थियों को यात्रा की कठिनाइयों से मुक्ति मिलेगी। पीएचडी शोध प्रबंध (थीसिस) का मूल्यांकन अब ऑनलाइन माध्यम से किया जाएगा। इससे मूल्यांकन प्रक्रिया तेज होगी, रिपोर्ट समय पर उपलब्ध होगी। डिजिटल रिकॉर्ड भविष्य में संदर्भ और पुनर्मूल्यांकन के लिए सुरक्षित रहेगा। साथ ही शोधार्थियों के लिए पीएचडी वाइवा अब ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किया जाएगा। इससे देश-विदेश के विशेषज्ञों को वायवा में सम्मिलित करना आसान होगा, शोधार्थियों को यात्रा की कठिनाइयों से मुक्ति मिलेगी। पीएचडी शोध प्रबंध (थीसिस) का मूल्यांकन अब ऑनलाइन माध्यम से किया जाएगा। इससे मूल्यांकन प्रक्रिया तेज होगी, रिपोर्ट समय पर उपलब्ध होगी। डिजिटल रिकॉर्ड भविष्य में संदर्भ और पुनर्मूल्यांकन के लिए सुरक्षित रहेगा। साथ ही शोधार्थियों के लिए पीएचडी वाइवा अब ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किया जाएगा।

संबद्ध महाविद्यालयों का निरीक्षण भी अब ऑनलाइन : नई संबद्धता के तहत संबद्ध महाविद्यालयों के लिए ऑनलाइन निरीक्षण की जो व्यवस्था लागू करने का निर्णय लिया गया। नई संबद्धता के अंतर्गत महाविद्यालयों को अपनी शैक्षणिक, प्रशासनिक और भौतिक सुविधाओं का विवरण डिजिटल माध्यम से प्रस्तुत करना होगा। शोधार्थियों के लिए ऑनलाइन परीक्षणों के माध्यम से मूल्यांकन करेगी। इससे समय और धन की बचत के साथ पारदर्शिता भी बढ़ेगी। (नई दिल्ली रिपोर्टर)

HINDUSTAN

एलयू में अब संबद्धता, हाजिरी मूल्यांकन ऑनलाइन होगा

कवायद

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय में शैक्षणिक और शोध गतिविधियों को पारदर्शी और अद्यतन बनाने के लिए कई प्रक्रियाओं को ऑनलाइन माध्यम से करने का निर्णय लिया है।

सभी नए कॉलेजों को संबद्धता ऑनलाइन निरीक्षण से मिलेगी। समर्थ पोर्टल से छात्रों की ऑनलाइन उपस्थिति दर्ज की जाएगी। साथ ही पीएचडी वायवा और थीसिस का मूल्यांकन भी ऑनलाइन माध्यम से होगा। यह फैसला कुलपति प्रोफेसर जेपी सैनी की अध्यक्षता में सोमवार को मंथन हॉल में आयोजित संकायाध्यक्षों और विभागाध्यक्षों की बैठक में हुआ। इस बैठक में विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, शोध गतिविधियों को और अधिक पारदर्शी, सुलभ और समयबद्ध बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

कुलपति ने बताया कि निर्णयों का उद्देश्य उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करना, छात्रों व शोधार्थियों को आधुनिक तकनीक का लाभ पहुंचाना और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाना है।

बैठक में विश्वविद्यालय की शैक्षणिक, शोध गतिविधियों को और अधिक पारदर्शी, सुलभ और समयबद्ध बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

कुलपति ने बताया कि निर्णयों का उद्देश्य उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करना, छात्रों व शोधार्थियों को आधुनिक तकनीक का लाभ पहुंचाना और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाना है।

AMRIT VICHAR

व्याख्यान

लविवि में अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो . अभिजीत बनर्जी ने निर्धनता के पांच स्तंभों का किया विस्तार से वर्णन

आय बढ़ाने की जगह प्राथमिकता और व्यवहार में परिवर्तन जरूरी

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय में नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री प्रो . अभिजीत बनर्जी का स्वागत करते कुलपति प्रो . जेपी सैनी व प्रो . अरविंद मोहन। अमृत विचार

अमृत विचार: वर्ष 2019 में अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार विजेता प्रो. अभिजीत बनर्जी ने कहा कि आय बढ़ाने की तुलना में प्राथमिकताओं और व्यवहार में परिवर्तन लाना अधिक प्रभावी परिणाम दे सकता है। गरीबी को प्रभावित करने वाले पांच प्रमुख स्तंभ हैं। पोषण, सूक्ष्म ऋण (माइक्रोक्रेडिट), शिक्षा, गरीबी का जाल व छोटे प्रयास। उन्होंने भूख और वैश्विक गरीबी जैसी समस्याओं के समाधान हेतु प्रायोगात्मक दृष्टिकोण के अनुप्रयोग पर चर्चा की और कहा कि मौजूदा समय में व्यापक ढांचे की जगह जमीनी स्तर पर ध्यान देने से बेहतर परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

सोमवार को लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित व्याख्यान के दौरान प्रो. बनर्जी ने 147 देशों में किए गए अपने एक सर्वाधिक चर्चित पुस्तक- पुअर इकोनॉमिक्स: ए रेडिकल रीथिंकिंग ऑफ दी वे टू फाइट ग्लोबल पावर्टी के द्वितीय संस्करण पर केंद्रित रहा। यह व्याख्यान उनकी चर्चित पुस्तक- पुअर इकोनॉमिक्स के दूसरे संस्करण पर केंद्रित रहा। प्रो. बनर्जी ने कहा कि भूख और वैश्विक गरीबी जैसी जटिल समस्याओं के समाधान के लिए प्रयोग आधारित सोच बेहद जरूरी है। गरीबी को समझने और उससे प्रभावी ढंग से निपटने में पोषण, शिक्षा, माइक्रोक्रेडिट और छोटे-छोटे प्रयासों की अहम भूमिका होती है। नीतियां तभी कारगर बनती हैं, जब उनका जमीनी स्तर पर सही ढंग से क्रियान्वयन हो।

कर्ज की अनुपलब्धता फंसाती गरीबी में

ऋण की अनुपलब्धता लोगों को गरीबी के दुष्चक्र में फंसा देती है। उत्पादक परिसंपत्तियों के हस्तांतरण को तकनीकी प्रशिक्षण के साथ संयोजित करने वाले कार्यक्रम परिवारों को गरीबी से आत्मरोजगार की ओर ले जाने में सहायक हो सकते हैं। सूक्ष्म वित्त के बारे में उन्होंने कहा कि पिछले 10 से 15 वर्षों में सूक्ष्म वित्त संस्थानों का तीव्र विस्तार हुआ है, फिर भी वे अब भी औसत व्यक्ति की पहुंच से बाहर हैं।

सुशासन की नीतियां पर्याप्त नहीं

सुशासन, लोकतंत्र, शिक्षा का शासन और व्यापार नीति अपने आप में नीति-निर्माण का मार्गदर्शन करने के लिए पर्याप्त हैं, सही नहीं है।